छुड़ाए गए

(1:7, 8)

हर महाद्वीप में, हर देश में, हर नगर में, हर परिवार में, लोग किसी न किसी प्रकार का समारोह या जश्न मनाने के लिए इकट्ठे होते रहते हैं। उदाहरण के लिए, लोग जन्म दिन और वर्षगांठ मनाते हैं, इसके लिए घरों को सजाते हैं और कार्ड व उपहार आदि खरीदते हैं। उस जश्न को और उसमें भाग लेने वालों को याद रखने के लिए तस्वीरें खींचते और फिल्म बनाते हैं।

एक राष्ट्र के रूप में, भारत में भी, स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस और धन्यवाद के दिन की कई छुट्टियां होती हैं। इन समारोहों में परिवार, मित्र, पिकनिक, पटाखे और परेड आदि शामिल होते हैं। इन विशेष अवसरों के माध्यम से हमें स्मरण रहता है कि हम एक राष्ट्र हैं; यहां तक हम कैसे पहुंचे; और हमारा उद्देश्य ज़्या है; और हमारा इतिहास ज़्या है।

बाइबल से हमें पता चलता है कि हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण जश्न वह होना चाहिए जो परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमें दिया है। परमेश्वर के लोगों की हर सार्वजनिक सभा में मसीह के पद और उसके द्वारा किए गए काम का बड़ा जश्न होना चाहिए।

इफिसियों की पुस्तक के प्रारज़्भिक शज़्द परमेश्वर की उन सब बातों के लिए जो मसीह में उसने हमें दी हैं, जश्न के दायरे में आते हैं। 1:3–14 में हमें समारोहपूर्ण वाज़्य मिलता है।

स्तुति की ''तुरही की गूंज'' में पौलुस ने इस बात के लिए आनन्द मनाया कि परमेश्वर ने हमें मसीह में हर आत्मिक आशीष से आशीषित किया है (1:3)। उसने इस बात के लिए भी आनन्द मनाया कि परमेश्वर ने हमें मसीह में अपने चुने हुए लोग बनाया है (1:4)। परमेश्वर ने हमें अपनी संतान बनाने के लिए गोद लिया है (1:5)। उसने मसीह में दिए गए नि:शुल्क अनुग्रह के लिए भी आनन्द मनाया (1:6)।

फिर हम इस शानदार वाज़्य पर आते हैं: ''हमको उस [अर्थात मसीह] में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया'' (1:7, 8)।

मसीह में हम छुड़ाए होने का आनन्द मनाते हैं। इस आनन्द की समझ कैसे आती है?

हम छुड़ाए जाने के अर्थ का आनन्द मनाते हैं

''हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, ... मिला है'' (1:7)। पौलुस ने मसीह में छुटकारे का आनन्द मनाया, परन्तु ''छुटकारा'' से उसका ज़्या भाव है? ''शर्त'' और

''खर्च'' दो शब्दों को ध्यान में रखें।

यह छुटकारा छुटकारे से पहले की हमारी स्थिति के बारे में कुछ बताता है। एक टीकाकार का यह अवलोकन था, ''छुटकारे का मूल विचार किसी वस्तु या व्यक्ति को, जो किसी दूसरे का हो गया है, छुड़ाना है।''[1]

पुराने नियम में, छुटकारा किसी गुलाम को छुड़ाने के लिए चुकाए गए दाम को कहा जाता था। इस्राएल के लिए भी परमेश्वर द्वारा छुटकारा दिया गया था, जब उसने उन्हें मिसर की दासता से स्वतन्त्र कराया था। छुटकारे का अर्थ किसी दूसरे की अधीनता से स्वतन्त्र कराना या छुड़ाना है। पौलुस ने ''पाप के हाथ बिका हुआ'' (रोमियों 7:14) होने की बात लिखी। छुटकारे से मुझे उस स्थिति का स्मरण आता है जिसमें हम मसीह में आने से पूर्व थे। पाप हमारा प्रभु या स्वामी था।

छुटकारे का अर्थ समझने के लिए उस पापपूर्ण स्थिति को समझना आवश्यक है, जिसमें हम पहले थे। यह भी याद रखना आवश्यक है कि उस स्थिति से निकालने के लिए क्या किया गया। छुटकारे का *दाम* क्या था? पौलुस ने कहा, ''हमको *उसके लहू के द्वारा* छुटकारा मिला है।'' छुटकारा आसानी से नहीं मिला। स्वयं यीशु ने कहा कि वह ''इसलिए आया कि बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (मरकुस 10:45)। पतरस ने कहा, ''क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चान्दी-सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ'' (1 पतरस 1:18, 19)।

इब्रानियों की पत्री से पता चलता है कि मसीह ने ''बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया'' (9:12)। हमारा छुटकारा बहुत अधिक अकल्पनीय दाम देकर अर्थात परमेश्वर के पुत्र की दर्दनाक मृत्यु से हुआ है।

संसार के किसी भी देश में होने वाले गृहयुद्ध को टीवी पर देखकर हम परेशान हो जाते हैं। सुबह उठने पर पता नहीं होता कि समाचार पत्र में क्या प्रमुख समाचार होगा। इस बात से बेखबर कि शाम को एक-दूसरे से मिल पाएंगे या नहीं, हर सुबह परिवार के लोग एक-दूसरे से अलग होते हैं। यह भयंकर स्थिति है। इससे मेरे जैसे लोगों को उस सुरक्षा और स्वतन्त्रता के लिए, जो हमें मिली है, धन्यवाद देने की छूट होनी चाहिए। जिस बात का मैं दूसरों के साथ आनन्द लेता हूं, उसका किसी ने बहुत बड़ा दाम चुकाया है। आरलिंग्टन के राष्ट्रीय कब्रिस्तान जैसी जगहों में जहां 1,60,000 से अधिक अमेरिकी सैनिक दफ़न हैं, सफ़ेद क्रूसों की कतारें स्वतन्त्रता की कीमत याद कराती हैं।

यीशु ने हमारे लिए अपना प्राण दे दिया। यदि वह कलवरी पर न जाता, तो हमारे लिए कोई आशा न होती। उसने हमारे छुटकारे का दाम चुका दिया है। वह हमारा छुड़ाने वाला है।

हम इस सच्चाई का क्या करते हैं? क्या हम इसे केवल अपने मन में रखते हैं? क्या हम केवल इसके गीत गाते हैं? क्या हम कभी कभार इसे स्मरण कर लेते हैं? यीशु ने यह सच्चाई हमारे जीवनों में महत्वपूर्ण स्थान बनाने के लिए हमारे छुटकारे के लिए दी है। उसने हमें

छुड़ाया ताकि हम वह बन सकें, जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता था अर्थात उसे महिमा देने वाले, उसकी आज्ञा मानने वाले, उससे प्रेम करने वाले, उसे आनन्दित करने वाले और उसकी स्तुति करने वाले। इस योजना के विरुद्ध होकर पाप में जीवन बिताना चुनकर मैं ऐसा जीवन चुन रहा होता हूं जैसे वह कभी क्रूस पर मरा ही न हो; जैसे इसका कोई अर्थ ही न हो; जैसे इस पर ध्यान देने की कोई आवश्यकता ही न हो; और जैसे मेरी नज़र में मेरे लिए यीशु के लहू बहाने और मरने का कोई महत्व ही न हो।

छुटकारे का अर्थ यह है कि यीशु ने हमें वह स्थान दिलाने के लिए जो परमेश्वर चाहता है कि हमें मिले अर्थात नरक से निकालकर स्वर्ग के लिए तैयार करने के लिए दाम चुका दिया था।

हम छुटकारे के परिणाम को मनाते हैं

''हमको उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात *अपराधों की क्षमा,* ... मिला है'' (1:7)। छुटकारे का परिणाम पापों की क्षमा है।

''क्षमा'' (यू.: *aphesis*) संज्ञा क्रिया से निकला शब्द है जिसका अर्थ ''भेजना, विदा करना'' है। परमेश्वर हमारे पापों को हम से दूर भेज देता है। वे हमारे और परमेश्वर के बीच नहीं रहते।

पुराने नियम में रहने वाले लोग बलिदान देने का मेमना लाते थे। प्रायश्चित के दिन, महायाजक लोगों से मेमने तक सब पापों के सांकेतिक हस्तांतरण के रूप में उस पर अपने हाथ रखता था। फिर उस मेमने को जंगल में दूर छोड़ दिया जाता था ताकि वह फिर कभी डेरे में वापस न आ सके। वह मेमना चला जाता था और उसी तरह पाप भी (लैव्यव्यवस्था 16)।

यीशु मसीह हमारे बलिदान का मेमना बना। उसने हमारे अपराध को लेकर उसका दण्ड अपने ऊपर ले लिया:

> ... यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया (यशायाह 53:6)।
>
> जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (2 कुरिन्थियों 5:21)।
>
> वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया ... (1 पतरस 2:24)।

एक बार लोगों के एक झुंड ने अपने धार्मिक विश्वासों के सज़्बन्ध में पूछे जाने पर स्वर्ग और नरक के बारे में अलग-अलग विचार प्रस्तुत किए। उनमें से अधिकतर का एक विचार आपस में मिलता था कि *हमेशा के लिए आप कहां रहेंगे, इस पर निर्भर है कि आप कितने भले हैं।* अन्य शज़्दों में, यदि किसी व्यज़्ति पर परेशानी नहीं आती, वह ज़िज़्मेदारियां लेता है, लोगों से अच्छा व्यवहार करता है और उसकी अच्छाइयां उसकी बुराइयों की तुलना

में अधिक हैं, तो वह व्यज़्ति स्वर्ग में जाएगा।

यह विचार बाइबल में नहीं मिल सकता! बाइबल सिखाती है कि हम में से कोई भी इतना भला नहीं है कि कर्मों के द्वारा स्वर्ग में जा सके: ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं'' (रोमियों 3:10); ''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23); ''पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23)।

ये तीन आयतें ही इस अवधारणा को नकार देती हैं कि कर्मों से स्वर्ग में जा सकते हैं। स्कूल में सर्वश्रेष्ठ छात्र के रूप में, नागरिक ज़्लब द्वारा आदर्श नागरिक के रूप में, या आपकी मण्डली द्वारा दानी और परोपकारी व्यज़्ति के रूप में चुना जाना स्वर्ग जाने का कोई मापदण्ड नहीं है। केवल इस आधार पर स्वर्ग में नहीं जाया जा सकता है कि आप एक भले व्यज़्ति हैं। शुभ कर्म हमें स्वर्ग में नहीं ले जा सकते। हम में से कोई भी इतना भला नहीं हो सकता कि वह अपने कर्मों से स्वर्ग में जा सके। हमारे पापों ने यह देख लिया है।

जब मैंने पहली बार पाप किया, जब आपने पहली बार पाप किया तो कर्मों से हमारा स्वर्ग में जाना असज़्भव हो गया। किसी पापी को ''पाप रहित'' करने के लिए हम में से कोई भी कुछ नहीं कर सकता।

दूसरों को हम चाहे कितने भी भले लगें, परन्तु परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं हैं। हम अपने आप को परमेश्वर के ग्रहण योग्य नहीं बना सकते। केवल वही हमें पापों से क्षमा देकर ऐसा कर सकता है। ऐसा वह हमारे पापों को दूर भेजकर करता है। इसलिए हम छुटकारे के परिणाम अर्थात पापों की क्षमा का आनन्द मनाते हैं।

हम छुटकारे के माप का आनन्द मनाते हैं

''हमको उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, *उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार* मिला है। *जिसे उसने* सारे ज्ञान और समझ सहित *हम पर बहुतायत से किया*'' (1:7, 8)। पौलुस ने हमारी क्षमा की आवश्यकता तथा सज़्पूर्ण होने की पुष्टि की। हमारी क्षमा की सीमा परमेश्वर के असीमित अनुग्रह से मापी जाती है जिसे वह हमारे जीवनों में भरता है।

परमेश्वर अपने अनुग्रह के धन के अनुसार क्षमा करता है। परमेश्वर ने क्षमा देने का कोई कोटा नहीं रखा है। परमेश्वर किसी को इतना ''बड़ा'' पाप करने की अनुमति नहीं देता कि हम उस सीमा को कभी पार न कर पाएं। ''परन्तु जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ'' (रोमियों 5:20)। कोई मनुष्य ऐसा नहीं है जिसने परमेश्वर के अनुग्रह की पहुंच से बाहर पाप किया हो। हमारे पाप कभी भी इतने भयंकर नहीं हो सकते अर्थात इतने नहीं हो सकते कि परमेश्वर के अनुग्रह की पहुंच से बाहर हों। सच्चाई तो यह है कि आपका धर्म आपको स्वर्ग में नहीं ले जा सकता चाहे आप कितनी भी कोशिश कर लें; परन्तु यदि आप यीशु में भरोसा रखते हैं तो बड़े से बड़ा पाप भी आपको स्वर्ग से बाहर नहीं रख सकता।

थॉम लैमन्स ने एक नॉवल लिखा जो पाठकों को पहली सदी में मसीह के क्रूस के

समय तक और उसके बाद के वर्षों तक ले जाता है। इसका मुज़्य पात्र लिनुस नामक एक बढ़ई है, जिसे रात को जगाकर नासरत के एक विद्रोही गुरु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए एक क्रूस बनाने के लिए बुलाया गया था। उसने वह क्रूस तैयार किया था। बाद में उसी दिन लिनुस ने उसी क्रूस के पास खड़े होकर यीशु नासरी का लहू बहते और उसे मरते देखा।

उसे लगा कि इसका दोषी वही है। सत्य और जीवन की खोज में वह यरूशलेम से भाग गया। कई साल बाद, मरते हुए उस गलीली शिक्षक का स्मरण अभी भी उसका पीछा नहीं छोड़ता। लिनुस की भेंट तरसुस के शाऊल से हुई। अपनी काल्पनिक भेंट में लिनुस और शाऊल में यह बातचीत हुई:

> ''मैं अपराधी हूं, मैं ही उसके लहू का दोषी हूं! मुझे मालूम था, मुझे लग रहा था कि वह निर्दोष है, लेकिन फिर भी–'' वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया। उसके मन में एक निर्दोष व्यज़्ति का लहू समा गया था ...।
>
> ''मैंने ही वह क्रूस तैयार किया था जिस पर वह मरा,'' अंत में वह शर्मिन्दा और परेशान होकर बोला। ''मैं जानता था, फिर भी मैंने वह क्रूस बना दिया।''
>
> ... शाऊल ने झुककर उसे कंधे से पकड़कर उठाया। ''हे बढ़ई, निश्चय ही तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि तुम मुझ से बड़े अपराधी हो ...। परन्तु हम में से कोई भी उसकी मृत्यु की जिज़्मेदारी से बच नहीं सकता। लिनुस, ज़्या तुज़्हें समझ नहीं है? वह फसह का हमारा मेमना है, जो सबके लिए, चाहे पिछले समय में हुए या आगे होंगे अर्थात सारे संसार के पापों के लिए एक ही बार मारा गया।''
>
> लिनुस की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने सिर हिलाया, देख नहीं सकता था, अपने आप को समझा नहीं सकता था–
>
> शाऊल बोलता रहा, ''मेरे मित्र, इसे इस तरह सोच। यदि तुमने उसकी मृत्यु में योगदान दिया है, तो यह योगदान पूरी सृष्टि के लिए एक नया जीवन भी है। लिनुस, तूने केवल क्रूस ही नहीं बनाया। तूने एक वेदी भी तो बनाई है।''[3]

क्रूस इस बात की पुष्टि करता है कि हमारा पाप इतना बड़ा या खतरनाक नहीं हो सकता कि परमेश्वर का अनुग्रह बेकार जाए। लोगों ने परमेश्वर के सिद्ध पुत्र को लेकर, उसे कोड़े मारे और पीटा, उसे एक अपराधी की तरह मरने के लिए लकड़ी के क्रूस पर लटका दिया। यीशु को अपमानित करने, आहत करने और मिटाने के लिए जो भी हो सका, उन्होंने किया। उनके पापों की तुलना में परमेश्वर का अनुग्रह अभी भी कहीं अधिक था। परमेश्वर ने उसी से जो उन्होंने यीशु के साथ किया, उसके लहू के द्वारा उनके लिए क्षमा सज़्भव कर दी।

सारांश

ज़्या आप छुटकारे के आनन्द में शामिल हो गए हैं? याद रखें आपके भले कार्य आपको स्वर्ग में नहीं ले जा सकते। स्वर्ग में जाने का एकमात्र ढंग यीशु में होना है। ज़्या आप यीशु में हैं? अपना जीवन उसे दे दें। कल की प्रतीक्षा न करें!

छुटकारा आज भी एक वास्तविकता है। क्षमा आज भी दी जा रही है। अनुग्रह आज भी बहता है।

टिप्पणियां

[1]फ्रांसिस फोल्कस, द *एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द इफिसियंस,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संशो. संस्क., सामा. संस्क. लियोन मौरिस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन: विलि. बी. ईर्डमैंस पज्लिशिंग कं. 1989), 58. [2]''हैल'स सोबर कमबैक,'' *यू. एस. न्यूज़ एण्ड वर्ल्ड रिपोर्ट* (25 मार्च 1991): 56. [3]थॉम लैमन्स, *वन्स अपॉन ए क्रॉस* (सिस्टर्ज़, ओरिगन: मुल्टनोमा बुक्स, 1993), 304.